

देश विदेश की लोक कथाएँ — चिपमंक :



चिपमंक, मिक और स्कंक



संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Chipmunk Mink Aur Skunk (Chipmunk, Mink and Skunk)

Cover Page picture : Chipmunk, Mink, Skunk

Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com

Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World



विंडसर, कॅनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका	4
चिपमंक, मिंक और स्कंक	5
1 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों-1.....	7
2 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों-2	11
3 चिपमंक के शरीर पर धारियाँ क्यों-3.....	13
4 चिपमंक के शरीर पर धारियाँ क्यों-4.....	16
5 चिपमंक और भालू.....	21
6 शोर मचाने वाला चिपमंक	26
7 चिपमंक और हयीना	30
8 मिंक की कहानी	33
9 चीचेका मिंक.....	42
10 रैवन और मिंक	46
11 स्कंक ने कायोटी को पछाड़ा	51
12 चीता और छोटा स्कंक	57

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छपी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता

मई 2018

चिपमंक, मिक और स्कंक

कायोटी छोटा रेगिस्तानी भेड़िया, रैवन एक कौए जैसा पक्षी, चिपमंक एक गिलहरी जैसा जानवर, ईकटोमी एक परी मकड़ा, मिक और स्कंक आदि जानवर उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की लोक कथाओं के खास हीरो हैं।

कायोटी जो एक छोटा रेगिस्तानी भेड़िया है बहुत चालाक है। इसकी लोक कथाएँ हमने अलग से दी हुई हैं।¹

रैवन जो एक कौए जैसा पक्षी होता है उसकी बहुत सारी कथाएँ दुनियाँ बनाने से जुड़ी हुई हैं। इसकी भी लोक कथाएँ हमने तीन भागों में प्रकाशित की हुई हैं।²

ईकटोमी की भी बहुत सारी कथाएँ हमने “चालाक ईकटोमी” की नाम की पुस्तक में प्रकाशित की हुई हैं।³

चिपमंक एक बड़ी गिलहरी जैसा जानवर होता है। मिक एक चालाक और लालची जानवर है। इसकी खाल बहुत खास होती है जो बहुत मँहगी मिलती है और उसके कोट टोप और मफलर आदि कपड़े बनते हैं। स्कंक भी एक बड़ी गिलहरी जैसा ही जानवर होता है। इन तीनों की लोक कथाएँ हम यहाँ इस पुस्तक में दे रहे हैं।

तो लो पढ़ो ये लोक कथाएँ चिपमंक, मिक और स्कंक की कि उन्होंने किस किस के साथ क्या क्या किया। ये सारी लोक कथाएँ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

¹ “Chalak Coyote-1”, by Sushma Gupta written in Hindi language.

² “Raven Ki Lok Kathayen-1”, “Raven Ki Lok Kathayen-2”, and “Raven Ki Lok Kathayen-3”, all written by Sushma Gupta in Hindi language

³ “Chalak Iktomi”, by Sushma Gupta written in Hindi language.

1 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों-1⁴



बहुत पहले चिपमंक गिलहरी⁵ भी दूसरी गिलहरियों की तरह ही था, यानी उसके शरीर पर भी कोई धारी नहीं थी।

अफ्रीका के महाद्वीप के नाइजीरिया देश की यह कहानी यह बताती है कि उसको

ये धारियाँ कैसे मिलीं जैसी कि आज हम उसके शरीर पर देखते हैं।

एक बार एक जंगल में जहाँ बहुत से जानवर रहते थे इतनी ज्यादा बारिश हुई कि वह जंगल बहुत घना हो गया। और इतना घना हो गया कि जानवरों को जंगल में चलना भी मुश्किल हो गया।

सो उन्होंने इस मुश्किल को आसान करने का तरीका ढूँढने के लिये एक मीटिंग की। उस मीटिंग में यह तय हुआ कि जो कोई भी जानवर इस जंगल में चलेगा उसको जंगल के रास्ते साफ करने के लिये पैसा देना पड़ेगा।

चिड़ियों जो हवा में उड़तीं थीं उनको यह टैक्स माफ था क्यों कि वे तो उस जंगल की जमीन इस्तेमाल ही नहीं करतीं थीं।

चिपमंक साइज में तो बहुत छोटा था पर अपने जिद्दीपन में वह बहुत अक्खड़ था। उसने दूसरे जानवरों से कहा — “मैं कोई टैक्स

⁴ How the Chipmunk Got Stripes? – a folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Web Site : <http://allfolktales.com/folktales.php>

⁵ A type of squirrel with stripes mostly found in North America.

नहीं देने वाला चाहे इसका मतलब यही क्यों न हो कि मैं जमीन पर नहीं चल सकता।”

सो उसने पेड़ों पर ही एक शाख से दूसरी शाख पर कूद कर इधर उधर जाना शुरू कर दिया। वह जमीन को छूता ही नहीं था। इस तरह से वह उस जंगल की जमीन का इस्तेमाल ही नहीं कर रहा था।

एक जानवर बोला — “आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन तो उसको जमीन पर आना ही पड़ेगा। तब वह टैक्स देगा।” सब जानवरों ने यह सुना और अपने अपने काम पर चले गये।

कई दिन बीत गये पर चिपमंक ने जमीन को नहीं छुआ। सारे जानवरों ने अपना अपना टैक्स दे दिया। यहाँ तक कि सबसे होशियार कछुआ भी इस टैक्स से नहीं बच पाया। पर चिपमंक पेड़ों से नीचे नहीं आया।

कुछ जानवर उसके लिये बहुत दुखी थे। वे बोले — “शायद उसके पास पैसा न हो इसी लिये वह टैक्स न दे पा रहा हो। नहीं तो वह बेचारा ज़िन्दगी भर के लिये पेड़ों पर ही क्यों रहता और जमीन पर न आने का दुख सहता। यह हम लोगों के लिये बड़े दुख की बात है कि हममें से एक जानवर केवल टैक्स की वजह से इस तरह की ज़िन्दगी अपना ले।”



सो बहुत सारे जानवरों ने चिपमंक के लिये कुछ पैसे इकट्ठा करने का विचार किया। उन्होंने इरोको पेड़ के नीचे एक घड़ा⁶ रख दिया और सब जानवरों को बोल दिया कि जो कोई भी जानवर चिपमंक की सहायता करना चाहे वह उस घड़े में कौड़ी⁷ डाल सकता था जब तक कि उसमें टैक्स के लायक पैसे जमा न हो जायें।

एक चिड़िया ने चिपमंक से यह सब कहा तो चिपमंक को यह सब सुन कर बड़ा मजा आया। उसने कहा इसका मतलब तो यह हुआ कि उनके पास इससे अच्छा पैसे का और कोई इस्तेमाल ही नहीं है कि वे मेरा टैक्स दें।

जब रात हुई तो चोरी छिपे वह इरोको पेड़ के नीचे गया और कौड़ियों का वह घड़ा ले कर चलता बना।

अगली सुबह जब जानवरों को उसके इस गन्दे कारनामे के बारे में पता चला तो वे बहुत परेशान हुए। उन्होंने चिपमंक को पकड़ने की बहुत कोशिश की पर उनमें से कोई भी जानवर उसको न पकड़

⁶ Translated for the word "Gourd". A gourd is a hard covering of big pumpkin like fruit. It is used after it is dried – see its picture above.

⁷ Cowrie shell – the currency in use at that time – see its picture above.

सका। चिपमंक पेड़ों की शाखों पर बहुत तेज़ी से कूद कर इधर से उधर जा रहा था।

तब जानवरों ने चिपमंक को जंगल से बाहर निकाल दिया क्योंकि उसने उनके विश्वास और दया को धोखा दिया था। जंगल से निकलने के बाद चिपमंक आदमियों के बीच रहने चला गया।

उसके बाद जंगल में जानवरों की कई मीटिंग हुई और उनमें से एक मीटिंग में किसी ने पूछा — “क्या किसी को मालूम है कि चिपमंक ने उन पैसों का क्या किया?”

तो दूसरे ने जवाब दिया कि वह उस पैसे को किसी अच्छे इस्तेमाल में नहीं लाया बल्कि उन पैसों से उसने धारियाँ खरीद लीं। सबने अपना सिर हिला कर उसके लिये अफसोस प्रगट किया।

मुफ्त का मिला हुआ पैसा ऐसे ही बेकार के कामों में खर्च होता है जैसे कि चिपमंक ने किया - धारियाँ खरीदने में।



2 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों-2⁸

यही कहानी अमेरिकन इन्डियन्स के आदिवासियों की इरोकोइ जनजाति⁹ में भी कही जाती है। पर वे लोग इसे इस तरह से कहते हैं।

एक बार एक दादी और उसकी पोती साथ साथ रहती थीं। उनके पास एक खाल थी जिसको वे कम्बल की तरह इस्तेमाल करती थीं। हालाँकि वह खाल काफी पुरानी हो गयी थी और उसके बाल भी काफी झड़ गये थे फिर भी वे अभी उसको इस्तेमाल कर रही थीं।

एक बार उन दोनों ने जंगल में लकड़ी काटने के लिये कैम्प लगाया। वे साथ में अपनी उस खाल को भी ले गयीं ताकि रात में ठंड से बच सकें।

वे कुछ ही दिन उस जंगल में थीं कि उन्होंने देखा कि उनकी वह खाल ज़िन्दा हो उठी है और उनसे बहुत नाराज है। डर के मारे उन्होंने वह खाल नीचे फेंक दी और घर की तरफ जितनी तेज़ी से भाग सकती थीं भाग लीं।

⁸ How Chipmunks Got Their Stripes – another version of the above story. This is an American Indian story from Iroquois people. Adapted from the Web Site :

http://www.firstpeople.us/FP-HTML-Legends/How_Chipmunks_Got_Their_Stripes-Iroquois.html

⁹ Iroquois Tribe of American Indians

पर जल्दी ही उन्होंने उस खाल को अपना पीछा करते हुए सुना। जब दादी को लगा कि वह खाल उनके काफी पास आ गयी है तो उसने गाना शुरू किया — “मैं और मेरी पोती अपनी जान बचा कर भाग रहे हैं।”

जब दादी का गाना खत्म हुआ तो उस खाल के पीछा करने की आवाज भी बन्द हो गयी थी पर कुछ देर बाद वह आवाज फिर से सुनायी पड़ने लगी।

जब वे घर पहुँचीं तो वह खाल जो एक भालू थी उनके इतने पास थी कि जैसे ही वे दरवाजा खोल कर घर में घुसीं और दरवाजा बन्द करने वालीं थीं कि उसने उनके ऊपर अपना पंजा मारा। इस से उनकी पीठ छिल गयी। फिर भी वे किसी तरह से घर के अन्दर घुस गयीं।

ये दोनों दादी पोती चिपमंक थीं। उसके बाद से चिपमंक के शरीर पर धारियाँ पड़ गयीं इसलिये चिपमंक के शरीर पड़ी ये धारियाँ उस भालू की दी हुई हैं।



3 चिपमंक के शरीर पर धारियाँ क्यों-3¹⁰

चिपमंक के शरीर पर धारियाँ क्यों की एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की इरोकोइ जनजाति¹¹ में कही सुनी जाती है।

यह बहुत पुरानी बात है कि सारी धरती अंधेरे से ढकी हुई थी। जितने भी प्राणी वहाँ रह रहे थे वे नहीं जानते थे कि दिन की रोशनी क्या होती है।

एक दिन जंगल के सारे जानवर यह विचार करने के लिये एक खुली जगह इकट्ठे हुए कि इसी अँधेरे में रहना ठीक है या फिर दिन की रोशनी लाना ठीक है।

हिरन, चिपमंक, रैकून, भेड़िया, भालू और बहुत से दूसरे जानवर बहुत ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ गये। वे पहाड़ इतने ऊँचे थे कि उनकी चोटी पर कोई भी पेड़ नहीं था। वहाँ केवल चट्टानें ही चट्टानें थीं।

उनके सिर के ऊपर अँधेरे में सैंकड़ों की तादाद में तारे चमक रहे थे। जंगल के सभी जानवरों में सबसे बड़ा और सबसे ज़्यादा

¹⁰ How the Chipmunk Got Its Stripes – a folktale from the Iroquois Tribe of Native Americans, North America. Adapted from the Web Site :

https://projects.ncsu.edu/project/lancet/fifth_grade/chipmunk5th.pdf

¹¹ Iroquois Tribe of American Indians

ताकतवर जानवर था भालू। और पहाड़ की चोटी पर पहुँचने वालों में वही सबसे पहला जानवर था।

इस तरह भालू पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच कर नीचे जंगल की तरफ देखने लगा और अँधेरे में रहने के लिये कहने लगा। उसकी दलील यह थी कि जानवर अँधेरे में ज़्यादा अच्छी तरह से सो पायेंगे क्योंकि उनको जगाये रखने के लिये तब रोशनी वहाँ नहीं होगी।

पर और दूसरे बहुत सारे जानवर डरे हुए थे सो उन्होंने भालू की बात मान ली। रैकून बोला कि उसको अँधेरे से कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि वह तो इतना तेज़ था कि उसको तो अँधेरे में भी बहुत सारा खाना मिल सकता था।

भेड़िया भी बहुत खुश था क्योंकि वह तो अँधेरा हो या रोशनी कभी भी अपना गाना गा सकता था।

लेकिन एक जानवर भालू के सामने खड़ा हुआ। वह था चिपमंक। चिपमंक जो जंगल का सबसे छोटा जानवर था उसने कहा कि अच्छा तो तभी रहेगा अगर अँधेरा और रोशनी दोनों ही हों। असल में चिपमंक बहुत ही होशियार जानवर था।

जैसे भालू ने अँधेरे के लिये बोलना शुरू किया तो चिपमंक ने रोशनी के लिये बहुत सारी दलीलें देनी शुरू कीं।

धीरे धीरे रात गुजरती रही। भालू बात करते करते थक गया पर चिपमंक की जबान तो चलती ही रही जैसे कि दुनियाँ की सारी ताकत उसके पास थी।

धीरे धीरे सब जानवरों को नींद आने लगी एक एक करके वे सब सोने लगे। पर चिपमंक अभी भी बोले जा रहा था।

आखिर सुबह हुई तो सब जानवरों ने पहाड़ों की चोटी पर से पहली बार सूरज निकलता देखा सो जब वे जागे तो यह दृश्य देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

चिपमंक ने तो यह देख कर इस पहाड़ी से उस पहाड़ी पर नाचना शुरू कर दिया। पर इससे भालू बहुत नाराज हो गया क्योंकि उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई थी। वह बहुत जोर से चिपमंक के पीछे भागा और पहाड़ के नीचे तक भागा चला गया।

भालू बहुत तेज़ भाग रहा था। वह जल्दी ही चिपमंक के पास तक पहुँच गया और उसने बड़ा सा पंजा उसको पकड़ने के लिये बढ़ाया पर चिपमंक भी तेज़ था वह उससे बच कर भाग निकला लेकिन भालू भी कम नहीं था। वह उसको पकड़ तो नहीं पाया हॉ उसने उसकी पीठ को जरूर खरोंच दिया जिससे उसकी पीठ पर धारियाँ बन गयीं। इसीलिये चिपमंक के शरीर पर आज तक धारियाँ देखी जाती हैं।



4 चिपमंक के शरीर पर धारियाँ क्यों-4¹²

चिपमंक के शरीर पर धारियाँ क्यों की एक और लोक कथा। यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की सेनेका जनजाति में कही सुनी जाती है।



यह बहुत पुरानी बात है जब चिपमंक के बादामी रंग के सुन्दर बाल हुआ करते थे। उस समय उसके शरीर पर कोई धारी नहीं हुआ करती थी।

एक सुबह एक चिपमंक जाड़ों के लिये अपने बिल में अपना खाना इकट्ठा कर रही थी। वह अपने मुँह के थैले में गिरियाँ और बैरीज़ भर भर कर बार बार अपने बिल के अन्दर जा रही थी और बार बार अपने बिल से बाहर आ रही थी।

तभी उसने देखा कि सामने से एक भालू उसकी तरफ चला आ रहा था। वह कीड़े मकोड़े ढूँढने के लिये अपने पैरों से लकड़ी के भारी भारी लट्टे लुढ़काता चला आ रहा था और जो भी कीड़े मकोड़े उसको मिल जाते थे उनको अपने मुँह में रख लेता था।

¹² How the Chipmunk Got Its Stripes – a folktale from the Seneca Tribe of Native Americans, North America. Adapted from the Web Site :

<http://www.planetozkids.com/oban/legends/why-chipmunks-have-stripes.htm>

चिपमंक ने देखा कि वह भालू उसके पास आता जा रहा था। चिपमंक भी उस समय कुछ कुछ बुड़बुड़ाती जा रही थी और कुछ कुछ खाती जा रही थी।

भालू एक लड़ा लुढ़काते हुए बोला — “ज़रा मुझे तो देखो कि मैं कितना ताकतवर हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ।” कहते हुए उसने अपना एक पंजा जमीन में घुसाया और जमीन में से काफी सारे कीड़े निकाल कर अपने मुँह में रख लिये।

चिपमंक ने अपना सिर ऊपर उठाया और बोली — “ऐसा है क्या?”

भालू रुका और रुक कर चारों तरफ देखा तो चिपमंक भी अपने बिल में से बाहर निकल कर उसके सामने आ गयी। भालू ने उसकी तरफ देख कर कहा — “हाँ यह सच है। देखो न तुम सारे जानवर मुझसे डरते हो।”

चिपमंक ने अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहा — “क्या तुम सुबह को सूरज का निकलना रोक सकते हो?”

भालू बोला — “मैंने इसकी कभी कोशिश नहीं की पर मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूँ कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। कल सुबह को सूरज नहीं निकलेगा। मैं भालू ऐसा कहता हूँ।”

ऐसा कह कर भालू तो पूर्व की तरफ मुँह करके घास और पत्तियों पर आराम से लेट गया और चिपमंक यह सोच कर हँसते हुए अपने बिल में घुस गयी कि भालू कितनी गलती पर था।

भालू वहाँ रात भर जागता हुआ लेटा रहा। सुबह हुई तो चिड़ियाँ चहचहाने लगीं और पूर्व में लाली छा गयी। यह देख कर भालू अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अपने आगे के दोनों पैर पूर्व की तरफ करते हुए बोला — “सूरज आज नहीं निकलेगा।”

चिपमंक भी अपने बिल में से निकल आयी। अब सूरज को तो निकलना ही था सो वह तो निकल आया पर यह देख कर भालू बहुत परेशान हुआ। चिपमंक अपने मुँह पर अपना पंजा रख कर हँसी और हँस कर बोली — “सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है। सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है।”

और वह यह गाते हुए नाचने लगी — “सूरज तो निकल आया आहा सूरज तो निकल आया।”

चिपमंक जैसे छोटे से जानवर को अपने जैसे ताकतवर जानवर की हँसी उड़ाते हुए देख कर भालू को और ज़ोर का गुस्सा आ गया और चिपमंक तो नाचती गाती ही रही। भालू की हार पर खुशी के मारे चिपमंक तो धरती पर लोटने लगी।

वह धरती पर लोटते लोटते गा रही थी — “आहा सूरज तो निकल आया और भालू इस बात पर बहुत गुस्सा है।”

भालू को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था सो उसने उसके ऊपर अपना एक पंजा रख दिया और चिल्लाया — “अगर मैं सूरज

को निकलने से नहीं रोक सका तो कोई बात नहीं पर तुम अब सूरज डूबता हुआ नहीं देखोगी।”

चिपमंक यह सुन कर घबरा गयी और बोली — “ओह भालू जी मुझे आपका मजाक नहीं बनाना चाहिये था। मैं तो मरने के लायक ही हूँ। पर इससे पहले कि आप मुझे खायें मुझे उस बनाने वाले की प्रार्थना तो कर लेने दीजिये जिसने सबको बनाया है।”

भालू बोला — “ठीक है जल्दी से करो।”

चिपमंक ने प्रार्थना करनी चाही पर भालू का पंजा उसे दबाये हुए था सो वह बोली — “भालू जी आपका पंजा तो बहुत भारी है उसने मुझे इतने ज़ोर से दबा रखा है कि मेरी तो आवाज ही नहीं निकल रही। अपन पंजा ज़रा सा उठा लीजिये ताकि मेरी आवाज तो निकले।”

भालू ने गुरांति हुए अपना पंजा जरा सा उठा लिया। बस चिपमंक को भागने की जगह मिल गयी और वह अपने बिल की तरफ भाग ली।

भालू ने फिर से उसको अपने पंजे से पकड़ने की कोशिश की पर वह उसके पंजे से निकल गयी। चिपमंक उसके पंजे में तो नहीं आयी पर भालू के पंजे ने उसकी पीठ पर खरोंच की धारियाँ डाल दीं।

वे ही खरोंचें चिपमंक के शरीर पर आज धारियाँ जैसी दिखायी देती हैं। ये धारियाँ हमें इस बात की याद दिलाती हैं कि अपने से ताकतवर का मजाक बनाने का क्या फल होता है।



5 चिपमंक और भालू¹³

चिपमंक की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका में रहने वाले इन्डियन्स की इरोकोइ जनजाति में कही सुनी जाती है।

यह तब की बात है जब जानवर बोला करते थे। उस समय एक भालू इधर उधर घूम रहा था। ऐसा कहा जाता है कि भालू हमेशा अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं। क्योंकि वे बहुत बड़े होते हैं और ताकतवर होते हैं इसलिये सचमुच में ही वे सब जानवरों में कुछ खास ही होते हैं।

सो एक बार यह भालू अपने पंजों से लकड़ी के बड़े बड़े लट्टों को लुढ़काता हुआ खाने की खोज में चला जा रहा था। इस भालू को अपने ऊपर बहुत भरोसा था सो चलते चलते वह बोला — “मैं जो चाहे कर सकता हूँ।”



तभी एक छोटी सी आवाज आयी —

“ऐसा है क्या?”

भालू ने नीचे देखा तो वहाँ एक छोटा सा चिपमंक¹⁴ एक गड्ढे में से झाँक रहा था।

¹³ Chipmunk and Bear – a folktale from Native Americans of North America – Iroquois people.

Adapted from the Web Site :

<http://www.firstpeople.us/FP-HTML-Legends/ChipmunkandBear-Iroquois.html>

¹⁴ Chipmunk is a squirrel-like animal with stripes mostly found in North America. See its picture above.

भालू बोला — “हाँ यह ठीक है। मैं जो चाहे वह कर सकता हूँ।”

कह कर उसने अपना एक पंजा आगे बढ़ाया और उससे एक बड़ा सा लड़ा लुढ़का दिया और बोला — “देखो यह मैंने कितनी आसानी से कर दिया। मैं सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ। सारे जानवर मुझसे डरते हैं।”

चिपमंक ने पूछा — “क्या तुम सुबह को उगते हुए सूरज को भी उगने से रोक सकते हो?”

भालू ने कुछ पल सोचा और बोला — “मैंने कभी इस बात की कोशिश नहीं की पर मुझे यकीन है कि मैं उगते हुए सूरज को भी रोक सकता हूँ।”

चिपमंक ने पूछा — “क्या तुम यह बात यकीन के साथ कह सकते हो?”

“हाँ मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूँ। तुम देखना कल सूरज नहीं उगेगा। मैं भालू यह कहता हूँ।” और भालू यह कह कर पूर्व की तरफ मुँह करके बैठ गया।

उसके पीछे पश्चिम में सूरज रात के लिये डूब गया पर भालू वही बैठा रहा। चिपमंक रात को आराम से सोने के लिये अपने बिल में चला गया। वह यह सोच सोच कर आनन्द ले रहा था कि भालू भी कितना बेवकूफ जानवर है। यह नहीं जानता कि यह क्या कह रहा है।

सारी रात भालू वहीं बैठा रहा ।

सुबह हुई तो पहली चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया और पूर्व में पहली रोशनी चमकी जो सूरज निकलने से पहले चमकती है ।

भालू बोला — “आज सूरज नहीं उगेगा ।”

उसने चमकती हुई रोशनी की तरफ देखा और फिर बोला — “आज सूरज नहीं उगेगा ।”

खैर सूरज तो उगा जैसे रोज उगता है । यह देख कर भालू तो बहुत परेशान हुआ पर चिपमंक बहुत खुश हुआ । वह हँसा और हँसता ही रहा फिर बोला — “सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है ।”

चिपमंक को इसमें इतना आनन्द आया कि वह अपने बिल में से बाहर निकल आया और चारों तरफ घूम घूम कर गोल गोल नाचने लगेगा —

सूरज उग आया, सूरज उग आया

भालू बहुत दुखी है, पर सूरज तो उग ही आया

भालू तो वहाँ बहुत ही दुखी बैठा हुआ था जबकि चिपमंक खुशी से गाये जा रहा था, नाचे जा रहा था और इतना खुश था कि जमीन में लोट भी रहा था ।

तभी भालू ने जितनी देर में मछली पानी में से निकलती है उससे भी जल्दी अपना पंजा उठाया और उसे जमीन में दे मारा । वह बोला

— “शायद मैं सूरज को उगने से नहीं रोक सकता पर अब तुम दूसरा सूरज नहीं देखोगे।”

चिपमंक बोला — “ओह भालू नहीं। तुम सबसे ज़्यादा ताकतवर हो। तुम सबसे ज़्यादा तेज़ हो। तुम सब जानवरों में सबसे अच्छे हो। मैं तो बस तुमसे यों ही मजाक कर रहा था।”

पर भालू ने अपना पंजा वहाँ से नहीं हटाया।

चिपमंक फिर बोला — “ओ भालू, तुम अगर मुझे मार डालोगे तो ठीक करोगे। मुझको तो मरना ही चाहिये। पर मुझे खाने से पहले तुम मुझे एक बार, बस आखिरी बार भगवान की प्रार्थना तो कर लेने दो।”

भालू बोला — “करो करो, अपनी प्रार्थना जल्दी से करो। अब तुम्हारा आसमान में चलने का समय आ गया है।”

चिपमंक बोला — “ओ भालू, मैं मरना तो चाहता हूँ पर तुम मुझको इतना ज़्यादा दबा रहे हो कि मैं साँस भी नहीं ले पा रहा। मैं ठीक से बोल भी नहीं पा रहा।

अगर तुम अपना पंजा ज़रा सा ऊपर उठा लो तो मैं कम से कम साँस तो ले सकता हूँ और उस भगवान की प्रार्थना कर सकता हूँ जिसने बड़े अक्लमन्द और ताकतवर भालू को बनाया और चिपमंक जैसे बेवकूफ, कमजोर और छोटे से चिपमंक को बनाया।”

यह सुन कर भालू ने अपना पंजा उठा लिया। हालाँकि उसने अपना पंजा बहुत जरा सा ही उठाया था पर उतनी जरा सी जगह ही उस छोटे से चिपमंक के वहाँ से भाग जाने के लिये काफी थी।

वह तुरन्त ही अपने बिल की तरफ दौड़ गया। भालू ने अपना पंजा फिर से चिपमंक के ऊपर रखने को गिराया पर चिपमंक तो यह जा और वह जा।

भालू इतना तेज़ नहीं था कि वह उस भागते हुए चिपमंक को पकड़ सकता पर फिर भी उसके पंजों के नाखूनों की खराशें उसकी पीठ पर खिंच गयीं और तीन पीली धारियाँ छोड़ गयीं।

आज तक चिपमंक की पीठ पर वे धारियाँ हैं और वे उसको हमेशा याद दिलाती हैं कि किसी के साथ क्या होता है जब कोई छोटा किसी बड़े की हँसी उड़ाता है।



6 शोर मचाने वाला चिपमंक¹⁵

एक बार की बात है कि इन्डियन्स का एक गाँव था जिसमें एक चिपमंक अपनी दादी के साथ रहता था। वह चिपमंक बहुत शोर मचाता था तो उसकी दादी कहती थी — “मेरे प्रिय पोते, जब तुम जंगल में होते हो उस समय तुमको इतना शोर नहीं मचाना चाहिये। क्योंकि इस तरह से कोई बड़ा जानवर तुमको ढूँढ लेगा और खा जायेगा।”



पर वह उसकी सुनता ही नहीं था। वह रोज सुबह जंगल जाता और जंगल में चारों तरफ दौड़ता रहता जब तक उसको बैरीज¹⁶ नहीं मिल जातीं। फिर वह एक पेड़ पर चढ़ जाता और उसकी

एक डाल पर बैठ कर बैरीज खाता रहता और शोर मचाता रहता।

शाम को उसकी दादी रोज उसको कहानी सुनाती। एक शाम उसकी दादी ने उसको एक बड़े साइज़ के आदमी¹⁷ कहानी सुनायी

¹⁵ The Noisy Chipmunk – a folktale from the Yakima Tribe of Native Americans, North America. Adapted from the Web Site :

<https://www.warpaths2peacepipes.com/native-american-stories/noisy-chipmunk.htm>

[This story has been featured in the book entitled “The Red Indian Fairy Book” by Frances Jenkins Olcott, Boston: Houghton Mifflin Co, 1917.

¹⁶ Berries are a small kind of, normally seedless, wild fruit which grows on bushes., such as Raspberries, Strawberries, in India like Ber etc – see the picture of some berries above.

¹⁷ Translated for the word “Giant”

जो जंगल में चिपमंक और दूसरे जानवर ढूँढने के लिये घूमता रहता था।

उसने उसे आगे बताया कि उसके पास एक थैला भी रहता था जिसमें लाल गरम पत्थर के टुकड़े रखे रहते थे। जब भी वह कोई छोटा सा जानवर पकड़ लेता उसको वह अपने थैले में डाल लेता और अपने खाने के लिये पका लेता।

छोटा चिपमंक बोला — “मुझे विश्वास नहीं होता दादी माँ कि ऐस कोई बड़े साइज़ का आदमी जंगल में था क्योंकि मैं तो जंगल में दो तीन साल से घूम रहा हूँ मैंने ऐसे बड़े साइज़ का आदमी न तो कहीं तो देखा और न कहीं सुना।”

दादी बोली — “फिर भी अगर तुम बहुत शोर मचाओगे तो वह बड़े साइज़ का आदमी आ कर तुमको पकड़ लेगा और खा जायेगा। बस तुम मेरी सुनो।”

खैर एक दिन छोटा चिपमंक रोज की तरह से उछलता कूदता शोर मचाता जंगल गया। वहाँ जा कर वह बहुत देर तक बैरीज़ ढूँढता रहा। फिर उसने सोचा कि “मैं आज जंगल में बहुत दूर तक जाता हूँ क्योंकि मैं उस बड़े साइज़ वाले आदमी को देखना चाहता हूँ।”

सो वह जंगल में दूर और और दूर तक चलता ही चला गया। आखीर में वह एक टीले के पास आ पहुँचा जहाँ बहुत सारी बैरीज़

लगी हुई थीं। उनको देख कर वह बहुत खुश हुआ और वहाँ बैठ कर बैरीज़ खाने लगा। साथ में वह शोर भी बहुत मचाने लगा।

उसने सोचा कि शायद वह बड़े साइज़ का आदमी उसका शोर सुन ले और वहाँ आ जाये। इस तरह से वह उसको देख पायेगा।

अब हुआ यह कि बड़े साइज़ के आदमी ने वाकई उसको सुन लिया था क्योंकि वह उसी टीले के नीचे रहता था जिसके ऊपर वह छोटा चिपमंक बैठा हुआ था।

उसने उस छोटे चिपमंक की सारी आवाजें सुन ली थीं जो उसने निकाली थीं। वह धीरे धीरे अपने रहने की जगह से टीले के ऊपर रेंगता हुआ आ पहुँचा था। पर वह चिपमंक के पास तक नहीं पहुँच सका क्योंकि वह टीला बहुत ऊँचा था।

सो वह जितनी मुलायमियत से कह सकता था उतनी मुलायमियत से चिपमंक से बोला — “ओ छोटे चिपमंक ज़रा नीचे तो आओ। मेरे पास बहुत सारी बैरीज़ हैं मैं तुमको बहुत सारी बैरीज़ दूँगा।”

पर छोटे चिपमंक न कहा — “नहीं अगर मैं नीचे आया तो तुम मुझे पकड़ लोगे और खा जाओगे।”

सो वह वहीं टीले के ऊपर ही बैठा रहा। उधर वह बड़े साइज़ का आदमी भी वहीं बैठा रहा और उसका इन्तजार करता रहा कि कभी तो वह नीचे उतरेगा।

शाम हो गयी वह बड़े साइज़ का आदमी वहीं बैठा रहा। छोटा चिपमंक ऊपर बैठे बैठे थक गया सो उसने वहाँ से भागने का एक प्लान बनाया।

उसने एक झाड़ी से कई डालियाँ तोड़ीं और नीचे फेंक दीं। बड़े साइज़ के आदमी ने उनके नीचे गिरने की आवाज सुनी तो उसने सोचा कि वह चिपमंक था। वह झट से उनके ऊपर कूद गया पर वह तो चिपमंक नहीं था। वे तो केवल झाड़ी की डालियाँ थीं।

चिपमंक को वहाँ न पा कर उसने ऊपर देखा तो चिपमंक तो वहाँ भी नहीं था। वह तो वहाँ से कब का जा चुका था। यह देख कर उसको गुस्सा आ गया सो वह चिपमंक के पीछे दौड़ा और दो तीन कदम में ही उसे चिपमंक दिखायी दे गया।

वह तब अपने घर में घुस ही रहा था कि बड़े साइज़ वाले आदमी ने उसको दबोचने की कोशिश की पर छोटा चिपमंक उसके हाथों से फिसल गया और अपने घर में कूद गया।

इस तरह से वह बच तो गया पर इस फिसलने में बड़े साइज़ के आदमी की उँगलियों के खुरचने के निशान उस छोटे चिपमंक की पीठ पर पड़ गये। वे निशान ही हमें उसकी पीठ पर पड़ी धारियों के रूप में दिखायी देते हैं।



7 चिपमंक और हयीना¹⁸

या हयीना के शरीर पर धारियाँ क्यों ।

एक बार की बात है कि एक चिपमंक मछलियाँ पकड़ने के लिये नदी पर गया । पहले उसने मछलियाँ नदी के किनारे पर रख लीं फिर उसने उनको खाना शुरू किया तो उसने खूब पेट भर कर मछलियाँ खायीं पर अभी भी बहुत सारी मछलियाँ बाकी बची थीं ।

सो चिपमंक चिल्लाया — “किसको मछली खानी है वह यहाँ आये और मछली ले जाये ।”



चिपमंक की आवाज सुन कर हयीना¹⁹ वहाँ आया तो चिपमंक उससे बोला — “आज मुझे बहुत सारी मछलियाँ मिल गयीं तो आज ये मछलियाँ तुम ले लो ।”

हयीना तो उन मछलियों को देख कर बहुत ही खुश हो गया और वे सारी मछलियाँ खा गया जितनी भी चिपमंक ने उस दिन पकड़ी थीं ।

¹⁸ Chipmunk and Hyena – a folktale from West Africa. Adapted from book : “African Folk Tales” by African Folklore. This book is available on the Web Site :

<https://books.google.ca/books?id=xEYIDwAAQBAJ&pg=PT21&lpg=PT21&dq=chipmunk+folk+tales&source=bl&ots=nr54yOOYoG&sig=ijW7FY8WHGEVZxWBaPwj8Fa5eTM&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwjix9aAxvrUAhXH64MKHSSRCCg4ChDoAQggMAE#v=onepage&q=chipmunk%20folk%20tales&f=false>

¹⁹ Hyena is a tiger-like animal – see its picture above.

चिपमंक यह देख कर बहुत गुस्सा हुआ कि हयीना उसकी पकड़ी सारी मछलियाँ खा गया था। उधर हयीना पेट भर कर मछलियाँ खा कर रेत पर लेट गया।

उसी समय वहाँ एक गिनी फाउल आया और एक पेड़ की शाख पर बैठ गया और अपने कपड़े पहनने लगा। कपड़े पहन कर उसने अपने पंख फैलाये।

उसको पंख फैलाते देख कर हयीना बोला — “काश ऐसी सुन्दर पोशाक मेरे पास भी होती।”

चिपमंक बोला — “मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। अगर तुम मुझे सफ़ेद मिट्टी और एक चाकू ला कर दे दो तो मैं तुम्हें गिनी फाउल से भी बढ़िया पोशाक बना कर दे दूँगा।”

अब हयीना तो बेवकूफ होते ही हैं। उसको यह पता ही नहीं चला कि उस समय चिपमंक उससे बहुत गुस्सा था क्योंकि उसने उसकी पकड़ी हुई सारी मछलियाँ खा ली थीं।

सो वह गया और एक बहुत तेज़ चाकू और सफ़ेद मिट्टी का एक बड़ा सा लौंदा ले कर आ गया। चिपमंक ने हयीना से कहा कि वह लेट जाये। हयीना लेट गया। अब चिपमंक ने उसकी पीठ चाकू से रंगनी शुरू कर दी।

बजाय रंगने के उसने उसकी पीठ पर लम्बी और चौड़ी चौड़ी खरोंचे डाल दीं और फिर उन खरोंचों को सफ़ेद मिट्टी से ढक दिया।

हयीना दर्द से चिल्ला पड़ा तो चिपमंक बोला — “थोड़ा धीरज तो रखो। तुम्हारे पास भी उतनी ही रंगीन और सुन्दर पोशाक होगी जितनी गिनी फाउल के पास है।”

अपना काम खत्म करके चिपमंक ने हयीना को जंगल में भेज दिया और हयीना अपने जख्म भरने के लिये जंगल में भाग गया और चिपमंक उसके जाने के बाद खूब हँसता रहा।

“अब मैंने तुमसे अपनी सारी मछलियाँ खाने का बदला ले लिया। तुमने मेरी सारी मछलियाँ क्यों खायीं।”

उसके बाद से हयीना की खाल धारी वाली हो गयी।



8 मिक की कहानी²⁰

एक बार टुमटुम²¹ रेत में से सीपी खोद रहा था और बच्चे केंकड़े पकड़ रहा था। ये बच्चे केंकड़े वहाँ ज्वार²² छोड़ गया था। वह यह सब करते करते थक गया था सो वह आराम करने के लिये एक व्हेल पकड़ने वाली नाव की तरफ चल दिया जो वहीं समुद्र के किनारे लगी हुई थी।

उधर एक ऊँचे पहाड़ का साया पड़ रहा था जिससे हवा ठंडी हो गयी थी। वहाँ जा कर वह भालू की एक खाल पर लेट गया। कुछ देर लेटने और आराम करने के बाद वह अपने घर की तरफ चल दिया।

तभी टुमटुम ने किसी को नाव चलाते हुए गाते हुए सुना
ओ मेरी पतवार मुझे किनारे पर ले चल, जैसे तूने पहले किया है
मुझे सूरज में पैदा होना है, मेरे बेटे, मेरे बेटे, मेरे अकेले बेटे

टुमटुम ने नाव के एक कोने से झाँका तो उसको एक लड़की दिखायी दी जो वहाँ समुद्र के किनारे रेत पर चल रही थी। वह लड़की उसी तरफ आयी जहाँ वह छिपा हुआ था। जब वह उधर

²⁰ Story of the Mink (Born-To-Be-In-The-Sun) – Taken from the Web Site :

<http://www.sacred-texts.com/nam/nw/ttb/ttb44.htm>

²¹ Tum-Tum

²² High tide

आयी जहाँ टुमटुम छिपा हुआ था तो टुमटुम ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ से आयी हो।

उस लड़की ने जवाब दिया — “मेरा नाम “अच्छी लगने वाली”²³ है। मैं “दस पहाड़ों के खुश”²⁴ शहर से आयी हूँ और मैं “सूरज में पैदा होने वाले” की माँ हूँ।”



टुमटुम बोला — “मैं उसको जानता हूँ वह मिक है। आओ मैं उसे तुमको दिखाता हूँ। इस समय वह एक मेंढक स्त्री²⁵ का इन्तजार कर रहा है जो मेरे बाबा “गरज चिड़े”²⁶ के टोटम पोल पर से उतर कर आने वाली है।”

उस सुन्दर लड़की ने उसका हाथ पकड़ा और चलते चलते उसने टुमटुम को अपनी कहानी सुनायी —

“एक सुबह जब मैं औटर मछली की खाल का कम्बल बना रही थी तो सूरज आया और मेरे कमरे के एक छेद में से मेरी पीठ पर चमकने लगा। उसके कुछ देर बाद ही मिक का जन्म हुआ। वह बहुत जल्दी ही एक आदमी जितना बड़ा हो गया और वहाँ से चला गया।

²³ Translated for the words “Nice to look at”

²⁴ Translated for the words “Pleasant Places in the Ten Mountains”

²⁵ Frog woman

²⁶ Translated for the words “Thunder Bird”

एक दिन वह मेरे पास आया और बोला — “माँ, मैं एक मेंढक लड़की से शादी करना चाहता हूँ।”

मैंने कहा — “पर तुमको उसकी टरनि की आवाज अच्छी नहीं लगेगी बेटा।”

“वही तो मुझे अच्छी लगती है माँ।”

मैंने कहा — “ठीक है अगर उसकी वह आवाज तुम्हें अच्छी लगती है तो फिर कर लो उससे शादी।”

और उन दोनों की शादी हो गयी। शादी के बाद वे एक नाव में बैठ कर पानी के उस पार दूर एक पहाड़ की तरफ चले गये और फिर वापस नहीं आये।”

टुमटुम उस सुन्दर लड़की को वहाँ ले गया जहाँ वह टोटम पोल खड़ा था। वहाँ उन्होंने देखा कि मिक मेंढक लड़की से बात कर रहा था।

उसकी माँ ने उससे नम्रता से कहा — “ओ मेरे “सूरज में पैदा होने वाले” बेटे।”

मिक यह सुन कर मुस्कुराया और बोला — “माँ हम लोग “गरज चिड़े” के टोटम पोल की सुरक्षा में आराम कर रहे थे। आओ वह तुमसे भी मिल कर बहुत खुश होगा।”

यह सुन कर “गरज चिड़ा” बिजली की तरह से अपनी आँखें चमकाता हुआ और गरज के साथ पंख फड़फड़ाता हुआ टोटम पोल

के ऊपर से उड़ गया। उसने गाँव का एक चक्कर लगाया और फिर वहीं आ गया जहाँ उसके मेहमान खड़े हुए थे।

वहाँ आ कर उसने अपनी पंखों की पोशाक और मुखौटा उतारा और आदमी के रूप में आ गया। फिर उसने टोटम पर लगे सभी को वहाँ से उतरने के लिये और अपना अपना मुखौटा उतार कर मिक की माँ से मिलने के लिये कहा।

उनमें से कुछ ने अपना मुखौटा उतारा और आदमी के रूप में आ गये। केवल दो लोग ही ऐसे थे जिन्होंने यह नहीं किया – एक था जूनाक और दूसरा था रैवन।²⁷

मिक की माँ ने सूरज की कहानी फिर से सुनायी और बोली कि मैं सूरज को ढूँढने आयी हूँ। पर आसमान में उसके घर तक कैसे पहुँचा जाये कोई नहीं जानता था। गरज चिड़े ने कहा कि वह आसमान तक उड़ तो सकता था।

रैवन का विचार था कि उनको सूरज के नीचे तक पहुँचने का इन्तजार करना चाहिये ताकि फिर उसका घर आसमान में उतना ऊपर न रहे।

अन्त में टुमटुम बोला — “हमको चिड़े के तीर²⁸ बनाने चाहिये और उनको उसके घर पर मारने चाहिये। अगर किसी तरह से उनमें

²⁷ Zoonagua and Raven

[My Note : Read other folktales of Raven in “Raven Ki Lok Kathayen-1”, “Raven Ki Lok Kathayen-2” and “Raven Ki Lok Kathayen-3” all written by Sushma Gupta in Hindi language.]

²⁸ Bird arrows

से एक भी उसके घर पर लग जायेगा तो फिर हम दूसरा मारेंगे और फिर तीसरा। इस तरह हम उसकी एक लम्बी डंडी बना लेंगे जो धरती से आसमान तक जायेगी। फिर हम वहाँ जा सकते हैं।”

यह विचार सबको ठीक लगा सो सब चिड़े के तीर बनाने में लग गये। मिक ने एक बहुत मजबूत लकड़ी की कमान बनायी। जब सब कुछ तैयार हो गया तो टुमटुम ने वह कमान उठायी और तीरों की डंडी बनाने के लिये तीर मारने शुरू किये। पीछे से केवल एक बिना नोक वाला तीर रह गया।

जूनाक यानी “सोया हुआ” जागा और बोला — “इस तीर को मार कर सूरज को मैं जगाऊँगा।” क्योंकि तभी बादल के एक टुकड़े ने सूरज को ढक लिया था।

जूनाक ने वह तीर चलाया तो वह आसमान की तरफ उड़ चला और जल्दी ही गायब भी हो गया। सभी वहाँ आश्चर्यचकित से खड़े देख रहे थे और इन्तजार कर रहे थे कि देखें अब क्या होने वाला है।

सूरज को तो बहुत सारी चालें आती हैं। जूनाक का तीर इतनी जल्दी वापस आ गया कि वह तो ऊँघ भी नहीं पाया। और वह तीर उसके सिर पर इतनी जोर से आ कर लगा कि उसके सिर पर एक गूमड़ा²⁹ पड़ गया। वहाँ खड़े सभी लोग हँस पड़े।

²⁹ Translated for the word “Bump”.

टुमटुम ने वह तीरों की लाइन हिलायी तो वह सीडर की एक रस्सी बन गयी। उसने और मिक की माँ ने उसके ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया। उसके पीछे पीछे मिक भी अपनी पत्नी मेंढक लड़की को अपनी पीठ पर चढ़ा कर ऊपर चढ़ा।

वे लोग बहुत देर तक चढ़ते रहे तब कहीं जा कर वे एक बड़े घर में आये। उस घर के दरवाजे से बहुत सारी रोशनी सारी दुनियाँ के ऊपर पड़ रही थी। उसके दरवाजे पर एक बहुत ही लम्बा और मजबूत आदमी हाथ में झाड़ू लिये खड़ा था। वह वहाँ उन सबका स्वागत कर रहा था। वह सूरज था।

मेंढक लड़की को यह सब इतना अजीब लगा कि उसने तो टराना ही शुरू कर दिया। सूरज ने उन सबको अन्दर बुलाया। उसने उस “अच्छी लगने वाली” के बारे में पूछा।

वह बोला — “मैंने तुमको पहले भी कहीं देखा है।”

मिक तुरन्त ही बोला — “यह आपकी पत्नी है और मैं आपका बेटा हूँ।”

यह सुन कर सूरज बोला — “ओह, अब मुझे याद आया। क्या तुम मुझे अपने पैर उधार दे सकते हो। मैं हर समय चलता रहता हूँ न इसलिये मेरे पैर थक जाते हैं।

और अगर तुम बराबर झाड़ू नहीं लगाते रहे तो तुम्हारी बुआएँ और दादियाँ, यानी बादल, यहाँ आ जायेंगी और यहाँ अन्दर अँधेरा ही अँधेरा हो जायेगा। और सारे आसमान में भी।

और अगर “गरज चिड़ा” जानता है तो वह बिजली चमका कर और गरज लुढ़का कर लोगों को डरा कर उनकी बारिश की बूंदों की बालटियों में से वे बूंदें भी बिखेर सकता है।

आओ, तुम लोग घर के अन्दर आ जाओ। वह गधा जरूर ही कोई शरारत करने वाला होगा।” यह कह कर सूरज ने फिर से झाड़ू लगानी शुरू कर दी।

मिक और उसके दोस्त सब लोग अन्दर चले गये। अन्दर जा कर उन्होंने वहाँ बहुत सारी आश्चर्यजनक चीजें देखीं।

वहाँ की हर चीज़ चमकीली और बिल्कुल साफ थी। उसके चारों कोनों में चार मजबूत आदमी डंडे ले कर खड़े हुए थे जिनसे वे छत को सहारा दे रहे थे। उस घर में चारों तरफ सीडर की नक्काशी किये गये बक्से एक के ऊपर एक रखे हुए थे।

यह देख कर मिक की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी और वह इधर उधर घूम घूम कर देखने लगा कि उन बक्सों में क्या था। और उन बक्सों को खोलने और बन्द करने लगा।

एक बक्सा सूरज के निकलने से भरा हुआ था तो दूसरा सूरज की किरनों से। तीसरा इन्द्रधनुषों से भरा हुआ था तो चौथे बक्से में छिपने वाले सूरज रखे थे। चार बक्से अगर एक साथ खोल दिये जायें तब तो सब कुछ गड़बड़ हो जायेगा पर इस बात का मिक को तो पता नहीं था।

दूसरे लोगों ने सूरज के मुखौटे, उसके झुनझुने, लकड़ी के नक्काशी किये गये बरतन, और उसके नाच के समय पहनने वाले कपड़े उठा लिये। खाने के बक्से तो सारी जगह फैले पड़े थे।

घर के बीच में एक छेद था जहाँ से धरती दिखायी देती थी और इसके नीचे ज़िन्दगी और मौत का कुँआ³⁰ था जहाँ से धरती पर मरे हुए लोगों की आत्माएँ ऊपर आती थीं और दोबारा जन्म लेने वाली आत्माएँ अपने जीवन की यात्रा शुरू करने नीचे धरती पर जाती थीं।

सूरज ने मिक से फिर कहा — “तो तुम मुझे अपने पैर कब उधार दोगे मेरे बच्चे? देखो तो अभी यहाँ कोहरा हो रहा है।”

मिक ने अपने पैर निकालने शुरू ही किये थे तभी वहाँ एक बहुत जोर की चीख सुनायी दी जैसे हजारों उल्लू चीख पड़े हों। जो चार मजबूत आदमी छत को थामे हुए थे वे भी डर गये। सारा घर ऐसे काँप उठा जैसे कोई बहुत बड़ा भूचाल आ गया हो। सारे लोग परेशान हो उठे।

असल में गरज चिड़ा बाहर खड़ा था। बिजली चमक रही थी और गरज आसमान में इधर से उधर लुढ़क रही थी। उसको तो मजा आ रहा था।

सूरज के मेहमान उसके घर में इधर से उधर लुढ़के जा रहे थे जब तक वे सब उस ज़िन्दगी और मौत के कुँए में से नीचे नहीं गिर

³⁰ Well of Life and Death

गये। वे सब शान्ति से तैरते हुए जमीन पर ऐसे आ गिरे थे जैसे बरफ के टुकड़े किसी रेत के ऊपर आ गिरें।

जमीन पर पहुँच कर उन्होंने फिर से टोटम पोल पर चढ़ना शुरू कर दिया था। गरज चिड़ा फिर से सबसे पहले चढ़ा।

तभी टुमटुम की आँख खुल गयी। उसकी माँ पुकार रही थी —
“ओ शैतान लड़के, तू यहाँ छिपा हुआ है। चल बाहर बारिश में से घर के अन्दर चल।”



9 चीचेका मिक³¹



चीचेका मिक³² दूसरों के मामले में दखलन्दाजी करने वाला एक जानवर था।

एक दिन वह एक जंगल से हो कर जा रहा था तो वह इधर उधर देखने के लिये एक सीडर के पेड़³³ पर चढ़ गया। वहाँ से उसे एक झील दिखायी दी। उसने देखा कि उस झील के किनारे पर एक आदमी अपनी नाव के साथ कुछ कर रहा था।

बस मिक उस पेड़ से नीचे उतरा और उस आदमी के पास पहुँचा। वहाँ जा कर उसने देखा कि वह हिरन के कुछ ढाँचे उस नाव में भर रह था।

उसने उस आदमी को नमस्ते की और फिर पूछा कि क्या वह उन हिरन के ढाँचों को उसकी नाव में रखवाने में उसकी सहायता कर सकता था। वह आदमी राजी हो गया।

³¹ Cheecheka Mink – Taken from the Web Site :

<http://www.sacred-texts.com/nam/nw/ttb/ttb17.htm>

³² Mink is a dark colored semiaquatic species of rodent native to North America. See its picture above.

³³ Cedar tree – see the picture of a cedar tree. Cedar trees are of various types, this is one of them.

मिंक ने उस सब ढाँचों को मन ही मन गिन लिया। वे कुल मिला कर दस थे। उसको लगा कि इस समय उसको वहाँ खाना मिलने का कुछ मौका है।

यह सोच कर उसने उस अजनबी से पूछा कि क्या वह उन ढाँचों को उसके घर में रखवाने के लिये उसके साथ उसके घर चल तक चल सकता था? वह आदमी इस पर भी राजी हो गया।

मिंक नाव में बैठ गया और उस आदमी ने उस नाव की पतवार सँभाल ली। वह उस नाव को बड़ी मेहनत से खेने लगा। आखिर वे एक गाँव के पास आ गये जो झील के किनारे से 50 गज पीछे बसा हुआ था।

अचानक मिंक ने देखा कि नाव में से हिरन उतारे जा रहे हैं और घरों में ले जाये जा रहे हैं। यह सब मिंक को बड़ा अजीब सा लग रहा था क्योंकि वहाँ उसको कोई ऐसा आदमी दिखायी नहीं दे रहा था जो उनको उतार रहा हो।

वे हिरन सब अपने आप ही उतर रहे थे और अपने आप ही घरों को जा रहे थे। यह तमाशा देख कर मिंक ने उस आदमी पूछा कि उस गाँव में कितने घर हैं। उस आदमी ने जवाब दिया कि इस गाँव में करीब चालीस घर हैं और हर घर में तीस आदमी रहते हैं।

मिंक ने सोचा कि वह उन गाँव के घरों को जा कर देखेगा कि वे घर कैसे हैं। जब वह उन घरों को देखने गया तो वहाँ उसने पत्थर के चाकू, भाले, तीर कमान आदि पड़े हुए देखे।

सब घरों में आग जल रही थी। जलाने वाले पत्थर³⁴ लकड़ी के बक्सों में रखे हुए थे। खाना उबालने के लिये पानी रखा हुआ था। नाव में जो हिरन लाये गये थे उनको भूनने का सामान भी रखा था। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ खाना बन रहा था और ऐसा हर घर में हो रहा था पर फिर भी कहीं कोई आदमी दिखायी नहीं दे रहा था।

यह देख कर चालाक और लालची मिक को एक चालाकी सूझी कि क्यों न वहाँ से वह जो चाहे वह ले ले और उसको नाव में लाद कर अपने घर ले जाये।

यह सोचते हुए उसने जो कुछ वह लाद सकता था उसने वह सब नाव में लादा और नाव में बैठ कर नाव खे दी। वह किनारे से अभी केवल दो सौ गज दूर ही गया होगा कि उसने अपनी नाव किसी अनदेखी रस्सी से पीछे खींची जाती हुई महसूस की।

बहुत कोशिश करने के बाद भी वह अपनी नाव को वहाँ से सौ गज से ज़्यादा दूर नहीं खे सका। जब भी वह नाव को आगे खेने की कोशिश करता वह अनदेखी रस्सी उसको वापस खींच लेती।

वह सारी दोपहर उस नाव को वहाँ से ले जाने की कोशिश करता रहा पर वह उसको वहाँ से ले कर नहीं जा सका। वह बहुत थक गया था, पसीने से तर बतर था और अब उसको भूख भी लग आयी थी।

³⁴ Flint stones (called Chakamak patthar in Hindi – they help in starting fire)

आखिर मिक ने अपनी कोशिश छोड़ दी और अपना मिक का रूप रख कर तैर कर उस झील के दूसरे किनारे तक आ गया। उसने फिर उन गुप्त लोगों के गाँव में जाने का नाम नहीं लिया।



10 रैवन और मिक³⁵



एक बार रैवन और मिक³⁶ ने यह निश्चय किया कि वे लोग वहाँ जा कर रहेंगे जहाँ मछलियाँ बहुत होती हैं। वहाँ जा कर वे एक बड़ा भालू भी मारने वाले थे। सो वे उस

जगह की तरफ चल दिये।

दोनों के पास एक एक नाव थी सो वे अपनी अपनी नाव में बैठ कर वहाँ पहुँच गये जहाँ उनको एक भालू घूमता दिखायी दे गया पर वे उसका कुछ नहीं कर सके क्योंकि वे उसको भाला मारने से बहुत डर रहे थे।

तब रैवन ने मिक से कहा — “तुम एक मछली की पूँछ में छेद कर दो। इससे मैं उसके अन्दर चला जाऊँगा। और क्योंकि यह हो सकता है कि तब वह घूमने वाला भालू मुझे खा ले और जब वह मुझे निगल लेगा तो मैं उसकी छाती काट कर बाहर निकल आऊँगा।

³⁵ Raven and Mink – a folktale from American Indians, North America. Adapted from the Web Site : <http://www.ankn.uaf.edu/NPE/CulturalAtlases/Yupiaq/Marshall/raven/RavenandMink.html>

³⁶ Mink is a large mouse type animal – see its picture above. Its fur is sold at a very high price.

जब वह भालू मेरे पास आये तो तुम उसको जरा ध्यान से देखना। मैं जब उसमें से कूद कर बाहर आऊँ तो तुम उसको भाला मार देना। हो सकता है कि वह तभी मर जाये।”

मिक राजी हो गया और उसने रैवन को एक मछली की पूँछ में बन्द करके उस रास्ते पर डाल दिया जिस पर से भालू जा रहा था।

कुछ देर बाद वहाँ कुछ आया तो उन्होंने देखा कि वह भालू था। पर जब भालू ने उस मछली की पूँछ को खाने के लिये अपना मुँह खोला तो रैवन ने काँव काँव किया और उस मछली की पूँछ में से उड़ गया।

वह डर गया था इसलिये उस मछली की पूँछ के अन्दर नहीं रह सका। यह देख कर वह भालू भी वहाँ से भाग गया।

मिक ने रैवन से पूछा — “यह तुमने क्या किया? तुमने उसे जाने कैसे दिया जबकि वह तुम्हारे इतने पास आ चुका था? अब जब शाम हो जायेगी तब तुम्हारी बजाय यह काम मैं करूँगा।”

सो जब शाम हुई तो मिक मछली की पूँछ में जा कर बैठ गया। रैवन बोला जब तुम बाहर आओगे तब मैं उसको भाला मारूँगा।

आखिर एक भालू उधर आया और उसने वह मछली की पूँछ निगल ली। जैसे ही भालू ने वह पूँछ निगली वह इधर उधर नाचने लगा। उसी समय मिक भी उसकी छाती फाड़ कर बाहर निकल आया।

इसी समय रैवन को भालू को भाला मारना था सो उसने अपना भाला उसको फेंक कर मारा। उसने भाला मारा तो पर उसका भाला दो पेड़ों के बीच में अटक कर रह गया और वह भालू तक नहीं पहुँच सका।

रैवन ने अपने भाले को उन पेड़ों से बाहर निकालने की कोशिश भी की पर इतनी ही देर में मिक ने भालू की छाती फाड़ कर जो छेद किया था वह भालू उसी छेद होने से मर गया।

मिक ने फिर आ कर पूछा — “अरे क्या हुआ? तुम तो जब मैं बाहर आ रहा था तब उसको भाला मारने वाले थे? तुमने अपना भाला अपने पेट के सामने क्यों रखा हुआ था? क्या इसलिये कि तुम उसको एकदम से न मार सको?”

रैवन बोला — “नहीं नहीं। मेरा भाला दो पेड़ों के बीच में अटक गया था इसलिये मैं उसको नहीं मार सका।”

दोनों ने मिल कर फिर उस भालू की खाल निकाली और उसका माँस काटा। उन्होंने उसकी चर्बी भी निकाली।

रैवन बोला — “जैसे हमारे पुरखे लोग निकालते थे वैसे ही हम भी अब इस चर्बी में से इसका तेल निकालेंगे। वे पहले इसकी आँतें निकाल लेते थे और उसके बाद उसका तेल निकालते थे। मैं तुमको दिखाऊँगा कि वे यह काम कैसे करते थे।”

सो मिक तो चर्बी पकाने पर लग गया और रैवन उसकी आँत को रास्ते पर बिछाने के लिये ले कर चला गया।

भालू की आँत वाकई बहुत लम्बी होगी जो वह इतने लम्बे रास्ते पर बिछ पायी। रैवन ने आँत के एक किनारे पर एक गाँठ बाँध दी ताकि उधर से तेल बाहर निकल कर जमीन पर न गिर जाये।

और उसका दूसरा सिरा पकड़ कर वह बोला — “मैं अब जंगल की तरफ चलता हूँ और तुम उसका तेल पका कर उसकी आँत में भरना। वह जल्दी ही भर जायेगी। हमारे पुरखे यह काम इसी तरह से करते थे।”

सो मिक यह काम करता रहा। वह आँत में तेल भरता रहा और रैवन जंगल में चला गया। उसने जंगल का एक चक्कर लगाया और वहाँ आने का निश्चय किया जहाँ वह आँत खत्म होती थी।

मिक उस आँत को भरता रहा पर वह तो भरने पर ही नहीं आ रही थी। तेल आँत में गिरता जा रहा था गिरता जा रहा था पर आँत थी कि वह तो भर ही नहीं रही थी। उसको लगा कि रैवन जरूर ही आँत के आखिरी सिरे पर खड़ा होगा।

सो उसने अपना काम रोक दिया और आँत के आखिरी सिरे पर आया तो उसने देखा कि रैवन तो वहाँ खड़ा खड़ा तेल पी रहा था। “आहा तो इसी लिये यह आँत तेल से नहीं भर रही। अब मुझे पता चला।”

मिक को यह देख कर बहुत गुस्सा आया। उसने एक जलती हुई लकड़ी उठायी और रैवन के पीछे दौड़ा और उसके सिर पर मारी। रैवन पीछे गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

मिक ने उस आँत के उस सिरे को फिर से बाँधा और फिर वहीं वापस चला गया जहाँ वह चर्बी पका रहा था। आखिर रैवन को होश आया तो वह जंगल में भाग गया।

मिक फिर से अपने काम पर लग गया था। इस बार वह आँत भर गयी थी। जब शाम हो गयी तब रैवन वहाँ लौटा। उसके चेहरे पर उस जली हुई लकड़ी की कालिख लगी हुई थी।

मिक ने हँस कर पूछा — “अरे, तुम्हें क्या हुआ? तुम्हारे चेहरे पर यह कालिख कैसे लगी हुई है?”

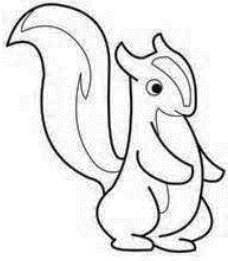
रैवन ने जवाब दिया — “मैं एक जला हुआ पेड़ खिसका रहा था जो मेरे पुरखे छोड़ गये थे वही मेरे ऊपर गिर पड़ा इसी से मेरे चेहरे पर यह कालिख लग गयी।”

मिक यह सुन कर हँस पड़ा।



11 स्कंक ने कायोटी को पछाड़ा³⁷

एक दिन की बात है कि कायोटी को बहुत भूख लगी थी। वह खाने की तलाश में इधर उधर घूम रहा था कि उसको एक स्कंक³⁸ मिल गया।



कायोटी स्कंक से बोला — “स्कंक भाई, तुम भूखे लगते हो और मुझे भी भूख लगी है। अगर मैं तुम्हारे लिये कुछ खाने का इन्तजाम करूँ तो क्या तुम मेरी चाल में मेरी सहायता करोगे?”

स्कंक बोला — “भला यह भी कोई पूछने की बात है कायोटी भाई? तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा।”

इस पर कायोटी बोला — “देखो, उस पहाड़ी के उस पार गिलहरियों का एक गाँव है। तुम वहाँ चल कर मरे हुए का नाटक करो मैं बाद में पहुँचता हूँ। फिर उनसे कहूँगा कि आओ अपने मरे हुए दुश्मन की खुशी में नाचते हैं।”

स्कंक की समझ में कुछ भी नहीं आया कि इस नाटक से खाने का इन्तजाम कैसे होगा पर कायोटी बोला — “तुम चलो तो सही और मरने का नाटक करो बाकी सब मैं देख लूँगा।”

³⁷ Skunk Outwits Coyote - a folktale from Comanche people, Native American Indians, North America.

³⁸ Skunk is a squirrel-like animal – see its picture above.

स्कंक राजी हो गया। वह गिलहरियों के गाँव में पहुँचा और वहाँ जा कर मरा हुआ सा लेट गया। कुछ ही देर में कायोटी भी वहाँ आ पहुँचा। उसने देखा कि बहुत सारी गिलहरियाँ अपने अपने बिलों से निकल कर बाहर खेल रहीं हैं।

इतने में कायोटी ने उनसे ज़ोर से पुकार कर कहा — “देखो न गिलहरियों, हमारा दुश्मन तो मर चुका है। क्यों न हम इसके चारों ओर नाच नाच कर खुशियाँ मनायें।”

मूर्ख गिलहरियों ने वैसा ही किया जैसा कायोटी ने उनसे करने के लिये कहा। कायोटी बोला — “हम लोग एक बड़ा सा गोला बना कर आँखें बन्द करके नाचेंगे। अगर किसी ने आँखें खोलीं तो उसके साथ तुरन्त ही कुछ बुरा होगा।”

ऐसा ही हुआ। सब गिलहरियों ने आँखें बन्द करके नाचना शुरू कर दिया। उधर तुरन्त ही कायोटी ने उनमें से एक गिलहरी को मार दिया और बोला, “अब अपनी आँखें खोलो।”

जब सारी गिलहरियों ने अपनी आँखें खोलीं तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनमें से उनकी एक प्रिय गिलहरी मरी पड़ी थी।

कायोटी तुरन्त बोला — “देखो न इस बेचारी ने नाच के बीच में अपनी आँख खोलीं तो यह मर गयी। अब तुम लोग फिर अपनी आँख बन्द करके नाचो। और हाँ याद रखना अगर बीच में तुममें से किसी ने भी अपनी आँखें खोली तो वह मर जायेगी।”

सो उन गिलहरियों ने अपनी अपनी आँखें फिर से बन्द कर लीं और फिर से नाचना शुरू कर दिया। कायोटी ने एक एक कर के उन गिलहरियों को मारना शुरू कर दिया।

उनमें से एक गिलहरी को कुछ शक सा हुआ तो उसने बीच में थोड़ी सी आँख खोल कर देखा तो उसको पता चल गया कि कायोटी ही उन सबको मार रहा था।

बस, उसने शोर मचा दिया और सारी गिलहरियाँ नाच छोड़ कर अपने अपने बिलों में घुस गयीं। स्कंक भी उठ कर खड़ा हो गया। वह खुश था कि कायोटी की यह चाल कितनी आसानी से काम कर गयी।

दोनों ने मिल कर लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और आग जलायी। फिर उस आग में उन्होंने उन गिलहरियों को भूनना शुरू किया।

माँस की सुगन्ध ने कायोटी को पागल सा कर दिया। उसने सोचा कि उस माँस का सबसे अच्छा हिस्सा वह खुद खायेगा सो इसके लिये उसने एक चालाकी खेली।

वह स्कंक से बोला — “स्कंक भाई, हम लोगों को एक दौड़ दौड़नी चाहिये। उस दौड़ में जो भी जीत जायेगा वही गिलहरियों का सबसे ज्यादा मजेदार माँस खायेगा।”

स्कंक भी चालाक था बोला — “नहीं भाई नहीं, यह शर्त तो ठीक नहीं है क्योंकि तुम तो दौड़ में बहुत तेज़ हो। मैं तो तुमसे दौड़

में कभी जीत ही नहीं सकता तो मुझे तो कोई मजेदार गिलहरी कभी मिलेगी ही नहीं।”

इस पर कायोटी बोला — “कोई बात नहीं, तुम खुश रहो। मैं अपने पैर में एक पत्थर बाँध लूँगा तब दौड़ूँगा।”

स्कंक बोला — “हाँ, यह ठीक है। अगर तुम अपने पैर में एक बड़ा पत्थर बाँध लो तो मैं इस दौड़ को दौड़ने के लिये तैयार हूँ।”

कायोटी बोला — “ठीक है, मैं यहाँ यह पत्थर अपने पैर से बाँध रहा हूँ तब तक तुम आगे चलो। मैं भागने वाली सीटी बजाऊँगा और फिर तुमको आ कर पकड़ लूँगा।”

स्कंक भाग लिया और तुरन्त ही कायोटी की नजरों से ओझल हो गया।

कायोटी ने अपने पैर में पत्थर बाँधा और धीरे धीरे भागना शुरू किया। कुछ दूर पहुँच कर उसने अपने पैर से पत्थर निकाल फेंका और बहुत तेज़ भागने लगा।

इधर स्कंक थोड़ी दूर भागने के बाद ही रुक गया और बीच में ही एक पत्तों के ढेर में छिप गया। उसने कायोटी को तेज़ी से भागते देखा तो वह वापस आग के पास लौट आया।

उसने जल्दी जल्दी सारी गिलहरियाँ आग में से निकालीं। उनमें से दो गिलहरियाँ बहुत पतली सी थीं सो वे उसने फिर से आग में डाल दीं।

बाकी गिलहरियों की पूँछ काट कर उसने उन पूँछों को भी आग में दबा दिया और मोटी मोटी गिलहरियाँ ले कर वह अपने पत्तों के ढेर के पास वापस आ गया।

उधर कायोटी तेज़ी से भागता चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि स्कंक शायद उसके आगे ही होगा परन्तु उसको तो वह सारे रास्ते कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

वह कहाँ होगा, वह दिखायी क्यों नहीं दिया, वह इतनी तेज़ कैसे भागा, यही सब सोचते सोचते वह आग के पास आ गया।

उसने देखा कि बहुत सारी पूँछें आग के बाहर निकल रही थीं। उसने एक पूँछ पकड़ कर खींची तो वह बाहर निकल आयी।

इस तरह उसने कई पूँछें पकड़ कर बाहर खींचीं तो वे सारी की सारी बाहर निकल आयीं पर उनमें गिलहरी एक भी नहीं थी। वे सारी की सारी उनकी पूँछें ही पूँछें थीं।

सारी पूँछें मजेदार थीं परन्तु कायोटी को कुछ शक हुआ सो एक डंडी ले कर उसने आग में घुमायी तो उसमें उसको केवल दो पतली सी गिलहरी दिखाई दीं जिन्हें स्कंक छोड़ गया था।

“लगता है किसी ने हमारा खाना चुरा लिया है।” कहते हुए कायोटी ने वे दोनों पतली गिलहरियाँ खा लीं।

स्कंक ने भी अब तक अपना खाना खत्म कर लिया था। वह एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ से वह कायोटी को देख

रहा था। जब कायोटी वे दोनों गिलहरियों खा रहा था तो उसने ऊपर से कुछ बची हुई हड्डियाँ कायोटी की तरफ फेंकीं।

यह देख कर कायोटी चिल्लाया — “तुम सारा बढ़िया वाला मॉस खा गये थोड़ा सा उसमें से मुझे भी दो न।”

स्कंक चिल्लाया — “क्यों दूँ मैं तुमको बढ़िया वाला मॉस? उसके लिये तो तुमने दौड़ रखी थी न? मैं दौड़ में जीत गया तो वह मॉस मेरा हो गया इसलिये अब तुम्हारा उस मॉस में कोई हिस्सा नहीं रहा।”

कायोटी ने स्कंक से बहुत प्रार्थना की, बहुत प्रार्थना की कि वह उसको बढ़िया वाले मॉस में से कुछ टुकड़े दे दे परन्तु वह तो तब तक अपना आखिरी कौर खा कर रफू चक्कर हो चुका था।

इस तरह स्कंक ने होशियार कायोटी को बेवकूफ बनाया।



12 चीता और छोटा स्कंक³⁹



स्कंक की यह लोक कथा दक्षिणी अमेरिका में रहने वाले माया लोगों की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक भला सा चीता था और एक मादा स्कंक⁴⁰ थी। मिसेज़ स्कंक के एक बेटा था जिसको चीते ने बैप्टाइज़⁴¹ किया था इसलिये मिसेज़ स्कंक उसकी गौडमदर⁴² बन गयी थी और क्योंकि मिस्टर चीते ने उसको बैप्टाइज़ किया था तो वह मिसेज़ स्कंक का गौडफादर⁴³ बन गया था।

एक बार मिस्टर चीते ने अपना खाना ढूँढने जाने का विचार किया तो वह मिसेज़ स्कंक के घर आया।

मिसेज़ स्कंक ने उसको अपने घर में देख कर पूछा — “मिस्टर चीते तुम यहाँ क्या ढूँढ रहे हो? तुम यहाँ किसलिये आये हो?”

मिस्टर चीता बोला — “मैं यहाँ कुछ खाना ढूँढने आया हूँ।”

³⁹ The Jaguar and the Little Skunk – a folktale from Maya people, South America.

Taken from the Web Site :

<http://www.worldoftales.com/South American folktales/South American Folktale 4.html>

⁴⁰ Skunk is big squirrel-like animal – see its picture above.

⁴¹ Baptizagion is a Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled over his/her head, water is poured over him/her.

⁴² A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

⁴³ A godfather is a male godparent in many Christian traditions or a man arranged to be the legal guardian of a child in case the parents die before adulthood or the age of maturity.

“ओह ।”

“मैं चाहता हूँ कि मेरा गौडसन मेरे साथ चले ताकि वह कुछ शिकार करना सीख ले ।”

मिसेज़ स्कंक बोली — “मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे गौडसन को तुम्हारे साथ शिकार करने के लिये जाना चाहिये । वह अभी बहुत छोटा है और अगर उसे कुछ हो गया तो । ओ गौडफादर उसके लिये यही अच्छा रहेगा कि वह अभी शिकार पर न जाये ।”

पर छोटे स्कंक ने कहा कि वह जायेगा । वह बोला — “नहीं माँ । मुझे लगता है कि मुझे जाना चाहिये । जो मेरे गौडफादर कह रहे हैं वह ठीक ही कह रहे हैं । मुझे शिकार करने की आदत डालनी चाहिये । मैं उनके साथ शिकार पर जा रहा हूँ ।”

मिसेज़ स्कंक बोली — “बेटा अगर तू जायेगा तो बहुत दूर चला जायेगा ।”

“नहीं माँ मैं जा रहा हूँ । आइये गौडफादर चलिये चलें ।” और वे दोनों शिकार पर चल दिये । रास्ते में मिस्टर चीते ने छोटे स्कंक से कहा — “हम लोग एक नदी की तरफ जायेंगे ।”

छोटे स्कंक ने पूछा — “हम लोगों को वहाँ पहुँचने में कितनी देर लगेगी?”

“बस हम लोग वहाँ अब पहुँचने ही वाले हैं । मेरे पीछे पीछे आते रहना ताकि तुम खो न जाओ ।”

“ठीक है ।” आखिर वे एक नदी के किनारे आ गये ।

वहाँ पहुँच कर मिस्टर चीते ने छोटे स्कंक से कहा — “हम लोग यहीं खाना खाने वाले हैं।”

छोटा स्कंक फिर बोला — “ठीक है।”

“तुम यहाँ आ जाओ। अब मैं अपना चाकू तेज़ करने जा रहा हूँ।”

छोटे स्कंक ने अपने गौडफादर की तरफ देखा और बोला “ठीक है।”

असल में तो मिस्टर चीता अपने पंजों के नाखून तेज़ कर रहा था जिनको वह चाकू बोल रहा था। अपने पंजों के नाखून तेज़ करके वह बोला — “मैंने अपने पंजों के नाखून तेज़ कर लिये हैं अब तुम यहाँ बैठ कर रखवाली करो क्योंकि मैं अब सो रहा हूँ। जब तुम उनको आते देखो तो मुझे उठा देना।”

“ठीक है गौडफादर।”

मिस्टर चीता बोला — “और हाँ देखो चिल्लाना नहीं। जब वे आ जायें तो बस मेरा पेट खुजा देना ताकि मैं उनको चौंका कर भगा न दूँ। पर अगर कोई छोटे सींग वाला जानवर आये तो मुझे जगाना नहीं जब तक कि कोई बड़े सींग वाला जानवर न हो।”

“ठीक है।”

और तब एक बड़े सींग वाला जानवर आया तो छोटे स्कंक ने चीते को जगाया। उसने उसका पेट खुजाया और एक हिरन की

तरफ इशारा किया तो चीते ने उस पर हमला किया और उसको पकड़ लिया।

चीता बोला — “आओ गौडसन अब इसे खाते हैं। आज हम मॉस खायेंगे।”

छोटा स्कंक बोला “ठीक है।” और दोनों ने उस हिरन को खूब खाया।

खाने के बाद चीता बोला — “बाकी बचा हुआ मॉस अब हम तुम्हारी माँ के लिये ले चलते हैं। क्योंकि अब हमारा पेट भर गया है तो बाकी बचा हुआ मॉस तो हम तुम्हारी माँ के लिये ले ही जा सकते हैं। आज तुम्हारी माँ भी वैसे ही मॉस खायेगी जैसे हमने खाया।”

जब वे दोनों घर आये तो चीते ने मिसेज़ स्कंक से कहा — “ज़रा यह खाना तो देखो। हम तुम्हारे लिये कुछ खाना ले कर आये हैं। हमने इसी खाने का शिकार किया था। गौडमदर पेट भर कर खाओ।”

मिसेज़ स्कंक ने कहा “ठीक है।” और उसने भी पेट भर कर खाना खाया। खाना खा कर वह बोली “बस अब मेरा पेट भर गया।”

मिस्टर चीता मिसेज़ स्कंक से बोला — “यह तो बहुत अच्छा है कि तुम्हारा पेट भर गया। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा पेट वाकई भर गया है। अच्छा तो अब मैं चलता हूँ।” और वह वहाँ से चला गया।

चीते के जाने के बाद छोटा स्कंक अपनी माँ के पास ही रहा। कुछ दिनों में उनका माँस खत्म हो गया।

जब उनका सारा माँस खत्म हो गया तो मिसेज़ स्कंक ने अपने बेटे से कहा — “बेटा हमारा माँस तो अब खत्म हो गया।”

“हाँ माँ माँस तो अब खत्म हो गया। मुझे लगता है कि मुझे अब शिकार पर फिर से जाना चाहिये और और माँस लाना चाहिये।”

मिसेज़ स्कंक ने पूछा — “तू कैसे लायेगा बेटे। तू क्या सोचता है कि तू इतना बड़ा है कि शिकार करके ला सके? नहीं मेरे बेटे नहीं। तू अभी बहुत छोटा है। क्या तुझे नहीं लगता कि तू मारा जायेगा?”

“नहीं माँ नहीं। मुझे मालूम है कि शिकार कैसे करते हैं। मेरे गौडफादर ने मुझे शिकार करना सिखा दिया है। मैं जा रहा हूँ।”

यह कह कर छोटा स्कंक वहाँ से चल दिया और मिसेज़ स्कंक उसके लिये परेशान हो गयी।

उसका बेटा उसी नदी के पास आया जहाँ वह अपने गौडफादर के साथ शिकार के लिये आया था।

छोटे स्कंक ने सोचा “मेरे गौडफादर ने ऐसा ही किया था फिर मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकता। उन्होंने ऐसे ही अपना चाकू तेज़ किया था।” सो उसने भी अपना चाकू तेज़ किया।

“मेरे गौडफादर ने भी ऐसा ही किया था सो मैं भी छोटे जानवरों का शिकार नहीं करूँगा। मैं भी बड़े सींगों वाले बड़े जानवर का शिकार करूँगा।

मैं केवल अपने लिये ही एक वैसा ही शिकार करूँगा जैसा कि मैंने अपने गौडफादर के साथ खाया था। मेरा चाकू मेरे पास है और अब मैं थोड़ी देर के लिये सोता हूँ।”

और वह छोटा स्कंक वहीं लेट कर सो गया लेकिन फिर वह जाग भी गया। वह किसी बड़े सींग वाले जानवर का इन्तजार कर रहा था। जब वह आया तो उसने यह सोच कर उस पर हमला किया कि वह अपने गौडफादर की तरह ही ताकतवर था।

पर वह तो उसके उस बड़े सींग वाले जानवर की गरदन से लटक कर रह गया। उसके पंजे उसकी खाल में घुस गये थे। वह अभी भी उसकी गरदन से लटका हुआ था और वह जानवर उसको दूर लिये जा रहा था। फिर वह पीठ के बल नीचे गिर पड़ा। उसका तो मुँह खुला का खुला रह गया।

जब काफी देर तक स्कंक अपनी माँ के पास नहीं लौटा तो माँ को चिन्ता हुई — “मेरे बेटे को क्या हो गया? वह अभी तक वापस क्यों नहीं आया? उसको जरूर ही कुछ हो गया है। मैं जा कर उसे देखती हूँ।”

मिसेज़ स्कंक अपने बेटे को देखने के लिये नदी के पास पहुँची। उसने अपने बेटे को वहाँ इधर उधर देखा पर वह उसको कहीं दिखायी नहीं दिया।

जब उसने उस बड़े सीगों वाले जानवर के आने के कदमों के निशान देखे तो वह तो रो पड़ी।

“लगता है वे यहाँ आये थे।” और वह उन कदमों के निशानों के पीछे पीछे जाने लगी। चलते चलते वह वहाँ आयी जहाँ उसका बेटा गिरा पड़ा था।

जैसे ही माँ स्कंक ने अपने बेटे को देखा तो उसने देखा कि उसके तो दाँत दिखायी दे रहे थे। उसके पास तक पहुँचने से पहले ही वह उसके ऊपर चिल्लायी — “मेरे बेटे तू किस पर हँस रहा है? तेरे तो सारे दाँत दिखायी दे रहे हैं।”

उसके पास पहुँच कर वह उससे बोली — “ला अपना हाथ मुझे दे। मैं तुझे लेने आयी हूँ और तू है कि मेरे चहरे की तरफ देख कर हँसे जा रहा है।”

उसने यह सोच कर उसके ऊपर अपना हाथ रखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था पर जब उसने उसको ध्यान से देखा तो उसने देखा कि उसका बेटा तो मर चुका था तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी।



देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई-मीडियम पर सोसायटी ऑफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

- 1 जंजीवार की लोक कथाएँ — 10 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — 45 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — प्रभात प्रकाशन
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — प्रभात प्रकाशन
- 4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 6 बंगाल की लोक कथाएँ — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टेक्नोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

- 1 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html>
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html>
- 3 रैवन की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html>
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html>
- 5 रैवन की लोक कथाएँ-3
<http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html>
- 6 इटली की लोक कथाएँ-1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html>

8 इटली की लोक कथाएँ-3

<http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html>

9 इटली की लोक कथाएँ-4

<http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html>

10 इटली की लोक कथाएँ-5

<http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html>

11 इटली की लोक कथाएँ-6

<http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyani.html>

12 इटली की लोक कथाएँ-7

<http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html>

13 इटली की लोक कथाएँ-8

<http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html>

14 इटली की लोक कथाएँ-9

<http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html>

15 इटली की लोक कथाएँ-10

<http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html>

16 जंजीवार की लोक कथाएँ

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html

17 चालाक ईकटोमी

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

18 नौस देशों की लोक कथाएँ-1

<http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html>

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं

<https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596>

1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाएँ

2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

Facebook Group

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटी के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्जन अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू एस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी - www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रही हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा

मई 2018